विश्व रंगमंच के उपलक्ष्य में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक 26-03-2022 को अग्रवाल महाविद्यालय बल्लभगढ़ में 'विश्व रंगमंच दिवस' के अवसर पर हिंदी विभाग एवं फोर्थ वॉल प्रोडक्शन के संयुक्त तत्वावधान में हरियाणा उर्दू अकादमी के सहयोग से एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय प्राचार्य एवं कार्यक्रम संरक्षक डॉ० कृष्ण कांत गुप्ता के मार्गदर्शन महाविद्यालय में समय-समय पर अनेक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।इसी श्रंखला में स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों के लिए 'हिंदी नाटकों में उर्दू का महत्व' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं में नाटकों के प्रति जागरूकता एवं उनकी प्रासंगिकता को बताना था। श्रीमती कमल टण्डन कार्यक्रम की अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थी। उन्होंने नाटकों के महत्व को बताते हुए उर्दू भाषा की नजाकत पर चर्चा की और शेक्सपियर के नाटकों का भी ज़िक्र किया। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ० अशोक कुमार निराला, स्ववित्तीय संस्थान की विभागाध्यक्ष डॉ० रेनू माहेश्वरी, कार्यक्रम संयोजिका डॉ० सुषमा रानी एवं श्रीमती मधु सिंगला द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ रंगकर्मी एवं विशिष्ट वक्ता श्री ज्योति संग, मुख्य वक्ता श्री आनंद भाटी वरिष्ठ हिंदी प्रवक्ता (राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय चंदावली) एवं डॉ० अंकुश शर्मा, (वरिष्ठ निर्देशक) उपस्थित रहे। दीपशिखा प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। पौधा देकर एवं शॉल उढ़ाकर अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम संरक्षक के रुप में उपस्थित महाविद्यालय प्राचार्य डॉ० कृष्ण कांत गुप्ता ने विश्व रंगमंच दिवस पर कार्यक्रम आयोजकों को बधाई देते हुए कहा कि नाटकों की परंपरा प्राचीन समय से चली आ रही है। महाविद्यालय में बाती नुक्कड़ नाटक टीम द्वारा समय-समय पर जागरूकता के लिए नाटक आयोजित किए जाते हैं। नाटकों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नही बल्कि समाजिक समस्याओं को दर्शना भी है।

कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता श्री ज्योति संग ने कहा कि नाटक परम्परा अत्यंत प्राचीन है।त्रासदी के समय पर नाटकों द्वारा ही भाव अभिव्यक्ति होती थी।जसवंत सिंह द्वारा पहली बार राम कथा मे उर्दू भाषा प्रयुक्त हुई। उन्होंने नाटकों की प्रासंगिकता बताते हुए हिंदी के साथ साथ उर्दू भाषा के योगदान पर विस्तृत चर्चा की।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री आनंद भाटी ने कहा कि रंगमंच क्रांति का पर्याय है। नाटकों का इतिहास बताते हुए अभिनय के प्रकारों पर चर्चा की। उन्होंने पारसी रंगमंच का ज़िक्र करते हुए उर्दू और हिंदी के सम्मिश्रित संवाद भी सुनाये।

कार्यक्रम के तृतीय वक्ता डॉ० अंकुश शर्मा ने हिंदी और उर्दू में बहन-बहन का नाता बताते हुए कहा "सगी बहनों का जो रिश्ता है, उर्दू और हिंदी में।
कहीं दुनिया की दो ज़िंदा ज़बानों मे नही मिलता"

भारतेंदु युग से लेकर आधुनिक युग तक के नाटकों में उर्दू के महत्व को बताया। हिंदी और उर्दू मिश्रित कविताओं एवं सम्वादों के माध्यम से विद्यार्थियों को रंगमंच की सार्थकता को बताया।

कार्यक्रम का समापन डॉ० रेनू माहेश्वरी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। इसमें स्नातक एवं स्नातकोत्तर के लगभग 125 विद्यार्थियों ने सक्रिय भागीदारी की और प्रश्नों के माध्यम से विचार विमर्श किया। हिंदी विभाग के सार्थक प्रयासों से यह एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सफल एवं सार्थक सिद्ध हुई।